भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

खण्ड –XXV अंक–12 30 जून, 2020

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः। अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः।।

मेरी उत्पत्ति को अर्थात् लीला से प्रकट होने को न देवता लोग जानते हैं और न महर्षिजन ही जानते हैं; क्योंकि मैं सब प्रकार से देवताओं का और महर्षियों का भी आदि कारण हूँ। **श्रीमद्भगवद्गीता 10/2**

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/ IESI/U-3/2020/ 240162 दिनांक 24.6.2020 के अनुसार **प्रो. दिव्या नायर** ने 4.6.2020 से संस्थान के पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/ IESI/U1/2020/ 239344 दिनांक 18.6.2020 के अनुसार **प्रो. बिस्वरूप चक्रबर्ती** ने 1.6.2020 से संस्थान के रसायन विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. बिस्वरूप चक्रबर्ती को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक जो भी पहले हो के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/ IESI/U3/ 2020/239677 दिनांक 22.6.2020 के अनुसार **प्रो. सौविक चक्रबर्ती** ने 29.5.2020 से संस्थान के अनुप्रयुक्त यांत्रिक विभाग में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. सौविक चक्रबर्ती को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक जो भी पहले हो के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-1I/2020/239792 दिनांक 22.6.2020 के अनुसार **श्री शरन कुमार** ने 18.5.2020 को संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में अनुबन्ध आधार पर 3 वर्ष की अवधि के लिए सातवें वेतन आयोग के लेवल–5 में वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-1I/2020/239793 दिनांक 22.6.2020 के अनुसार **श्री गौरव पाल** ने 28.5.2020 को संस्थान के संस्थान अभियन्ता कार्यालय में अनुबन्ध आधार पर 3 वर्ष की अवधि के लिए सातवें वेतन आयोग के लेवल–3 में कनिष्ठ सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-1I/2020/239432 दिनांक 19.6.2020 के अनुसार **श्री प्रशांत** ने 28.5.2020 को संस्थान के स्थापना अनुभाग–I में अनुबन्ध आधार पर 3 वर्ष की अवधि के लिए सातवें वेतन आयोग के लेवल–3 में कनिष्ठ सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-1I/2020/240458 दिनांक 26.6.2020 के अनुसार **श्री अभिषेक कुमार** ने 1.6.2020 को संस्थान के मनोरंजनात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधि बोर्ड (बीआरसीए) में अनुबन्ध आधार पर 3 वर्ष की अवधि के लिए सातवें वेतन आयोग के लेवल–3 में कनिष्ठ सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-1I/2020/240457 दिनांक 26.6.2020 के अनुसार **सुश्री प्रिया** ने 11.5.2020 को संस्थान के डिजाइन विभाग में अनुबन्ध आधार पर 3 वर्ष की अवधि के लिए सातवें वेतन आयोग के लेवल–3 में कनिष्ठ सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 30 जून, 2020 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

सुश्री सुषमा मदान (25799), अधीक्षक, गणित विभाग



सुश्री सुषमा मदान ने 18 अगस्त, 1979 को संस्थान में अवर श्रेणी लिपिक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 मई, 1980 को आपको आशुलिपिक के रूप में नियुक्त किया गया। 1 मई, 1988 को आर.सी.डी.एस. के अंतर्गत आपको वरिष्ठ

आशुलिपिक के रूप में चयनित किया गया। 1 मई, 1996 को आपको वरिष्ठ आशुलिपिक (प्र.को.) के रूप में चयनित किया गया। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी. एस. के अंतर्गत आपको अधीक्षक के रूप में मैप किया गया। 1 सितंबर, 2008 को एम.ए.सी.पी. के अंतर्गत आपको लेवल 8 में उन्नयन दिया गया। सौम्य स्वभाव की सुश्री सुषमा मदान एक मेहनती एवं कर्तव्यपरायण अधीक्षक रही है।

श्री शेरबान कुमार (25725), कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक, ईटीएससी



श्री शेरबान कुमार ने 8 मार्च, 1989 को संस्थान में वरिष्ठ मकैनिक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 अप्रैल, 1997 को आर. सी.डी.एस. के अंतर्गत आपको वरिष्ठ मकैनिक (प्र.को.) के रूप में चयनित किया गया। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको वरिष्ठ मकैनिक के रूप में मैप किया गया। 19 सितंबर, 2007 को आपको कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक के रूप में पुनः पदनामित किया गया। 1 सितंबर, 2008 को एम.ए.सी.पी. के अंतर्गत आपको उन्नयन दिया गया। 5 नवंबर, 2016 को भर्ती नियमों के अंतर्गत आपको मैप किया गया। श्री शेरबान कुमार एक मेहनती एवं कर्तव्यपरायण कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक रहे हैं।

श्री हरीश कुमार गुप्ता (25922), कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक, मनोरंजनात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधि बोर्ड (बीआरसीए)



श्री हरीश कुमार गुप्ता ने 12 मार्च, 1981 को संस्थान में अटेंडेंट के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। 1 जनवरी, 1987 को आपकी नियुक्ति गैस्टेटनर ऑपरेटर ग्रेड (II) के रूप में हुई। 1 जनवरी, 1995 में आर.सी. डी.एस. के अंतर्गत आपको गैस्टेटनर ऑपरेटर ग्रेड (I) के रूप में मैप किया गया। 1 जुलाई, 2000 मे आपको वरिष्ठ मकैनिक के रूप में पदनामित किया गया। 1 जनवरी, 2007 को आर.सी.डी. एस. के अंतर्गत आपको कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 1 जनवरी, 2017 को एम.ए.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको उन्नयन दिया गया तथा 5 नवंबर, 2016 को भर्ती नियमों के अंतर्गत आपको मैप किया गया। श्री हरीश कुमार गुप्ता एक मेहनती एवं कर्मठ कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक रहे हैं

श्री प्रदीप कुमार सक्सेना (26336), वरिष्ठ मेकैनिक, केयर



श्री प्रदीप कुमार सक्सेना ने 1 जुलाई, 1994 को संस्थान में मेकैनिक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको कनिष्ठ मेकैनिक के रूप में मैप किया गया। 1 अगस्त, 2006 को आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको वरिष्ठ मेकैनिक के रूप में पदोन्नत/ पुनःपदनामित किया गया। 2 जुलाई, 2014 को एम.ए.सी.पी. के अंतर्गत आपको उन्नयन दिया गया। 5 नवंबर, 2016 को भर्ती नियमों के अंतर्गत आपको वरिष्ठ मेकैनिक के रूप में मैप किया गया। श्री प्रदीप कुमार सक्सेना एक मेहनती एवं कर्तव्यपरायण वरिष्ठ मेकैनिक रहे हैं।

श्री देवी प्रसाद (70101), कनिष्ठ सहायक, निर्माण अनुभाग (वर्क चार्ज)



श्री देवी प्रसाद ने 31.3.1989 को संस्थान में ग्रुप 'डी' हेल्पर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 अप्रैल, 1997 को आपको 3050 – 4590 ₹ के वेतनमान में पदोन्नत किया गया। 1 जनवरी, 2006 को छठे केंद्रीय वेतन आयोग के अनुसार आपको 5200 – 20200 ₹ ग्रेड वेतन 1900 ₹ का संशोधित वेतनमान दिया गया। 1 सितंबर, 2008 को 5200 – 20200 ₹ ग्रेड वेतन 2000 ₹ में उन्नयन दिया गया। 23 फरवरी, 2017 को आपको कनिष्ठ सहायक ग्रुप 'सी' पद पर नियोजित किया गया। श्री देवी प्रसाद एक मेहनती एवं कर्मठ कनिष्ठ सहायक रहे हैं।

श्री शमशुदीन (70126), वरिष्ठ मेकैनिक (वर्क चार्ज), सुरक्षा एकक



श्री शमशुदीन ने 15 जनवरी, 1987 को संस्थान में (मेकैनिक पल्म्बर/ फिटर) (वर्क चार्ज)के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 जनवरी, 1996 को आपको संशोधित वेतनमान ₹ 3200–4900 दिया गया। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको कनिष्ठ मेकैनिक के रूप में मैप किया गया। 1 मई, 2003 को आर. सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको वरिष्ठ मेकैनिक के रूप में पदोन्नत/ उन्नयन किया गया। 1 जनवरी, 2006 को आपको 5200 – 20200 ₹ + ग्रेड वेतन 2800 ₹ दिया गया। 1 जनवरी, 2016 को आपको सातवें वेतन आयोग का लेवल–5 (29200–92300) दिया गया। श्री शमशुदीन एक मेहनती एवं कर्तव्यपरायण वरिष्ठ मेकैनिक रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शान्तिमय जीवन की कामना करता है।

त्यागपत्र स्वीकृत

स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/ESTT-2/2020/239786 दिनांक 22.6.2020 के अनुसार **श्री संदीप शर्मा,** कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक (कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 15.05.2020 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री संदीप शर्मा को 15.05.2020 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

दो गौरैया

–भीष्म साहनी

घर में हम तीन ही व्यक्ति रहते हैं – माँ, पिताजी और मैं। पर पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है। हम तो जैसे यहाँ मेहमान हैं, घर के मालिक तो कोई दूसरे ही हैं।

आँगन में आम का पेड़ है। तरह–तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते हैं। जो भी पक्षी पहाड़ियों–घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुँचता है, पिताजी कहते हैं वही सीधा हमारे घर पहुँच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवाकर लाया हो। यहाँ कभी तोते पहुँच जाते हैं, तो कभी कौवे और कभी तरह–तरह की गौरैयाँ। वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएँ, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं!

घर के अन्दर भी यही हाल है। बीसियों तो चूहे बसते हैं। रात–भर एक कमरे से दूसरे कमरे में भागते फिरते हैं। वह धमा–चौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते। बर्तन गिरते हैं, डिब्बे खुलते हैं, प्याले टूटते हैं। एक चूहा अँगीठी के पीछे बैठना पसन्द करता है, शायद बूढ़ा है उसे सर्दी बहुत लगती है। एक दूसरा है जिसे बाथरूम की टँकी पर चढ़कर बैठना पसन्द है। उसे शायद गर्मी बहुत लगती है। बिल्ली हमारे घर में रहती तो नहीं मगर घर उसे भी पसन्द है और वह कभी–कभी झाँक जाती है। मन आया तो अन्दर आकर दूध पी गई, न मन आया तो बाहर से ही 'फिर आऊँगी' कहकर चली जाती है। शाम होते ही दो–तीन चमगादड़ कमरों के आर–पार पर फैलाए कसरत करने लगते हैं। घर में कबूतर भी हैं। दिन–भर 'गुटर–गूँ, गुटर–गूँ' का संगीत सुनाई देता रहता है। इतने पर ही बस नहीं, घर में छिपकलियाँ भी हैं और बर्रे भी हैं और चींटियों की तो जैसे फौज ही छावनी डाले हुए है।

अब एक दिन दो गौरैया सीधी अन्दर घुस आईं और बिना पूछे उड़–उड़कर मकान देखने लगीं। पिताजी कहने लगे कि मकान का निरीक्षण कर रही हैं कि उनके रहने योग्य है या नहीं। कभी वे किसी रोशनदान पर जा बैठतीं, तो कभी खिड़की पर। फिर जैसे आईं थीं वैसे ही उड़ भी गईं। पर दो दिन बाद हमने क्या देखा कि बैठक की छत में लगे पंखे के गोले में उन्होंने अपना बिछावन बिछा लिया है, और सामान भी ले आईं हैं और मजे से दोनों बैठी गाना गा रही हैं। जाहिर है, उन्हें घर पसन्द आ गया था।

माँ और पिताजी दोनों सोफे पर बैठे उनकी ओर देखे जा रहे थे। थोड़ी देर बाद माँ सिर हिलाकर बोलीं, 'अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं। अब तो इन्होंने यहाँ घोंसला बना लिया है।'

इस पर पिताजी को गुस्सा आ गया। वह उठ खड़े हुए और बोले, 'देखता हूँ ये कैसे यहाँ रहती हैं! गौरैयाँ मेरे आगे क्या चीज हैं! मैं अभी निकाल बाहर करता हूँ।'

'छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!' माँ ने व्यंग्य से कहा।

माँ कोई बात व्यंग्य में कहें, तो पिताजी उबल पड़ते हैं। वह समझते हैं कि माँ उनका मजाक उड़ा रही हैं। वह फौरन उठ खड़े हुए और पंखे के नीचे जाकर जोर से ताली बजाई और मुँह से 'श––––––शू' कहा, बाँहें झुलाईं, फिर खड़े–खड़े कूदने लगे, कभी बाहें झुलाते, कभी 'श–––शू' करते।

गौरैयों ने घोंसले में से सिर निकालकर नीचे की ओर झाँककर देखा और दोनों एक साथ 'चीं–चीं करने लगीं। और माँ खिलखिलाकर हँसने लगीं।

पिताजी को गुस्सा आ गया, इसमें हँसने की क्या बात है?

माँ को ऐसे मौकों पर हमेशा मजाक सूझता है। हँसकर बोली, चिड़ियाँ एक दूसरी से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?

तब पिताजी को और भी ज्यादा गुस्सा आ गया और वह पहले से भी ज्यादा ऊँचा कूदने लगे। गौरैयाँ घोंसले में से निकलकर दूसरे पंखे के डैने पर जा बैठीं। उन्हें पिताजी का नाचना जैसे बहुत पसन्द आ रहा था। माँ फिर हँसने लगीं, 'ये निकलेंगी नहीं, जी। अब इन्होंने अण्डे दे दिए होंगे।'

'निकलेंगी कैसे नहीं?' पिताजी बोले और बाहर से लाठी उठा लाए। इसी बीच गौरैयाँ फिर घोंसले में जा बैठी थीं। उन्होंने लाठी ऊँची उठाकर पँखे के गोले को ठकोरा। 'चीं–चीं' करती गौरैयाँ उड़कर पर्दे के डण्डे पर जा बैठीं।

'इतनी तकलीफ करने की क्या जरूरत थी। पँखा चला देते तो ये उड़ जातीं।' माँ ने हँसकर कहा।

पिताजी लाठी उठाए पर्दे के डण्डे की ओर लपके। एक गौरैया उड़कर किचन के दरवाजे पर जा बैठी। दूसरी सीढ़ियों वाले दरवाजे पर।

माँ फिर हँस दी। 'तुम तो बड़े समझदार हो जी, सभी दरवाजे खुले हैं और तुम गौरैयों को बाहर निकाल रहे हो। एक दरवाजा खुला छोड़ो, बाकी दरवाजे बन्द कर दो। तभी ये निकलेंगी।'

अब पिताजी ने मुझे झिड़ककर कहा, 'तू खड़ा क्या देख रहा है? जा, दोनों दरवाजे बन्द कर दे!'

मैंने भागकर दोनों दरवाजे बन्द कर दिए केवल किचन वाला दरवाजा खुला रहा।

पिताजी ने फिर लाठी उठाई और गौरैयों पर हमला बोल दिया। एक बार तो झूलती लाठी माँ के सिर पर लगते–लगते बची। चीं–चीं करती चिड़ियाँ कभी एक जगह तो कभी दूसरी जगह जा बैठतीं। आखिर दोनों किचन की ओर खुलने वाले दरवाजे में से बाहर निकल गईं। माँ तालियाँ बजाने लगीं। पिताजी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे।

'आज दरवाजे बन्द रखो' उन्होंने हुक्म दिया। 'एक दिन अन्दर नहीं घुस पाएँगी, तो घर छोड़ देंगी।'

तभी पंखे के ऊपर से चीं–चीं की आवाज सुनाई पड़ी। और माँ खिलखिलाकर हँस दीं। मैंने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा, दोनों गौरैया फिर से अपने घोंसले में मौजूद थीं।

'दरवाजे के नीचे से आ गई हैं,' माँ बोलीं।

मैंने दरवाजे के नीचे देखा। सचमुच दरवाजों के नीचे थोड़ी–थोड़ी जगह खाली थी।

पिताजी को फिर गुस्सा आ गया। माँ मदद तो करती नहीं थीं, बैठी हँसे जा रही थीं।

अब तो पिताजी गौरैयों पर पिल पड़े। उन्होंने दरवाजों के नीचे कपड़े ठूँस दिए ताकि कहीं कोई छेद बचा नहीं रह जाए। और फिर लाठी झुलाते हुए उन पर टूट पड़े। चिड़ियाँ चीं–चीं करती फिर बाहर निकल गईं। पर थोड़ी ही देर बाद वे फिर कमरे में मौजूद थीं। अबकी बार वे रोशनदान में से आ गई थीं जिसका एक शीशा टूटा हुआ था।

'देखो–जी, चिड़ियों को मत निकालो' माँ ने अबकी बार गम्भीरता से कहा, 'अब तो इन्होंने अण्डे भी दे दिए होंगे। अब ये यहाँ से नहीं जाएँगी।'

क्या मतलब? मैं कालीन बरबाद करवा लूँ? पिताजी बोले और कुर्सी पर चढ़कर रोशनदान में कपड़ा ठूँस दिया और फिर लाठी झुलाकर एक बार फिर चिड़ियों को खदेड़ दिया। दोनों पिछले आँगन की दीवार पर जा बैठीं।

इतने में रात हो गई। हम खाना खाकर ऊपर जाकर सो गए। जाने से पहले मैंने आँगन में झाँककर देखा, चिड़ियाँ वहाँ पर नहीं थीं। मैंने समझ लिया कि उन्हें अक्ल आ गई होगी। अपनी हार मानकर किसी दूसरी जगह चली गई होंगी।

दूसरे दिन इतवार था। जब हम लोग नीचे उतरकर आए तो वे फिर से मौजूद थीं और मजे से बैठी मल्हार गा रही थीं। पिताजी ने फिर लाठी उठा ली। उस दिन उन्हें गौरैयों को बाहर निकालने में बहुत देर नहीं लगी।

अब तो रोज यही कुछ होने लगा। दिन में तो वे बाहर निकाल दी जातीं पर रात के वक्त जब हम सो रहे होते, तो न जाने किस रास्ते से वे अन्दर घुस आतीं।

पिताजी परेशान हो उठे। आखिर कोई कहाँ तक लाठी झुला सकता है? पिताजी बार–बार कहें, 'मैं हार मानने वाला आदमी नहीं हूँ।' पर आखिर वह भी तंग आ गए थे। आखिर जब उनकी सहनशीलता चुक गई तो वह कहने लगे कि वह गौरैयों का घोंसला नोचकर निकाल देंगे। और वह फौरन ही बाहर से एक स्टूल उठा लाए।

घोंसला तोड़ना कठिन काम नहीं था। उन्होंने पँखे के नीचे फर्श पर स्टूल रखा और लाठी लेकर स्टूल पर चढ़ गए। 'किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए,' उन्होंने गुस्से से कहा।

घोंसले में से अनेक तिनके बाहर की ओर लटक रहे थे, गौरैयों ने सजावट के लिए मानो झालर टाँग रखी हो। पिताजी ने लाठी का सिरा सूखी घास के तिनकों पर जमाया और दाईं ओर को खींचा। दो तिनके घोंसले में से अलग हो गए और फरफराते हुए नीचे उतरने लगे।

'चलो, दो तिनके तो निकल गए,' माँ हँसकर बोलीं, 'अब बाकी दो हजार भी निकल जाएँगे!'

तभी मैंने बाहर आँगन की ओर देखा और मुझे दोनों गौरैयाँ नजर आईं। दोनों चुपचाप दीवार पर बैठी थीं। इस बीच दोनों कुछ–कुछ दुबला गई थीं, कुछ–कुछ काली पड़ गई थीं। अब वे चहक भी नहीं रही थीं।

अब पिताजी लाठी का सिरा घास के तिनकों के ऊपर रखकर वहीं रखे–रखे घुमाने लगे। इससे घोंसले के लम्बे–लम्बे तिनके लाठी के सिरे के साथ लिपटने लगे। वे लिपटते गए, लिपटते गए, और घोंसला लाठी के इर्द–गिर्द खिंचता चला आने लगा। फिर वह खींच–खींचकर लाठी के सिरे के इर्द–गिर्द लपेटा जाने लगा। सूखी घास और रूई के फाहे, और धागे और थिगलियाँ लाठी के सिरे पर लिपटने लगीं। तभी सहसा जोर की आवाज आई, 'चीं–चीं, चीं–चीं!!!'

पिताजी के हाथ ठिठक गए। यह क्या? क्या गौरैयाँ लौट आईं हैं? मैंने झट से बाहर की ओर देखा। नहीं, दोनों गौरैयाँ बाहर दीवार पर गुमसुम बैठी थीं।

'चीं–चीं, चीं–चीं!' फिर आवाज आई। मैंने ऊपर देखा। पँखे के गोले के ऊपर से नन्हीं–नन्हीं गौरैयाँ सिर निकाले नीचे की ओर देख रही थीं और चीं–चीं किए जा रही थीं। अभी भी पिताजी के हाथ में लाठी थी और उस पर लिपटा घोंसले का बहुत–सा हिस्सा था। नन्हीं–नन्हीं दो गौरैयाँ! वे अभी भी झाँके जा रही थीं और चीं–चीं करके मानो अपना परिचय दे रही थीं, हम आ गई हैं। हमारे माँ–बाप कहाँ हैं?

मैं अवाक् उनकी ओर देखता रहा। फिर मैंने देखा, पिताजी स्टूल पर से नीचे उतर आए हैं। और घोंसले के तिनकों में से लाठी निकालकर उन्होंने लाठी को एक ओर रख दिया है और चुपचाप कुर्सी पर आकर बैठ गए हैं। इस बीच माँ कुर्सी पर से उठीं और सभी दरवाजे खोल दिए। नन्हीं चिड़ियाँ अभी भी हाँफ–हाँफकर चिल्लाए जा रही थीं और अपने माँ–बाप को बुला रही थीं।

उनके माँ–बाप झट–से उड़कर अन्दर आ गए और चीं–चीं करते उनसे जा मिले और उनकी नन्हीं–नन्हीं चोंचों में चुग्गा डालने लगे। माँ–पिताजी और मैं उनकी ओर देखते रह गए। कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख–देखकर केवल मुस्कराते रहे।

'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्र में हिन्दी

'क' क्षेत्र – बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र।

'ख' क्षेत्र – गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।

'ग' क्षेत्र – ओड़िशा, बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोराम, तमिलनाडु, तेलंगाना, कर्णाटक, आन्ध्र प्रदेश, केरल।

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 1772, 7144, 1242

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com